# क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

**संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति**
**संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्**


मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइलः 9415217277/81
ई-मेलःyogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेलः kriyayoga.canada@yahoo



बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

**प्रकाशनार्थ**

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनॉक : 9/2/2013


**9 फरवरी 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम**

# मौनी अमावस्या का वास्तविक स्वरूप

9 फरवरी 2013 इलाहाबाद । कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में आयोजित क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन हिन्दी तथा अँग्रेजी में बड़े ही प्रभावशाली रुप में सम्पन्न हो रहा है। कार्यक्रम में अनेक भारतीय एवं विदेशी साधक, ग्रामीण अंचल के नर-नारी, विद्यार्थी, तीर्थयात्री तथा कल्पवासी भारी संख्या में भाग ले रहे हैं। आज के कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने मौनी अमावस्या के वास्तविक स्वरुप पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि मौनी अमावस्या अथवा किसी भी पर्व, त्योहार आदि के वास्तविक स्वरुप का ज्ञान क्रियायोग साधना की गहनता में स्थित होने पर स्पष्ट होता है। समस्त त्योहारों, पर्वों, धार्मिक अनुष्ठानों तथा पूजा पद्धतियों का प्रचलित स्वरुप एक प्रतीक के रुप में है जिसके पीछे साधना का गहन रहस्य छिपा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मौनी अमावस्या क्रियायोग साधना की उच्चावस्था है जिसमें स्थित होने पर साधक सर्वस्व को प्राप्त कर परममौन (पूर्ण स्थिर अवस्था) जिसे इन्द्रियातीत अवस्था कहा गया है, में स्थिर हो जाता है। मौनी अमावस्या में मौनी का अर्थ निकटतम में अखण्ड मौन अवस्था की अनुभूति से है। ''मौनी'' शब्द मौन तथा 'ई' के संयोग से बना है। मौन का अभिप्राय परम मौन (पूर्ण स्थिर अवस्था) तथा 'ई' का अभिप्राय निकटतम से है। हमारे सबसे निकटतम हमारा स्वयं का स्वरुप है। अतः मौनी निकटतम अर्थात् स्वरुप

में मौन के प्रकट होने की पावन अवस्था है।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने अमावस्या को स्पष्ट करते हुए कहा कि अमावस्या गहन अंधकार को व्यक्त करता है। अमावस्या के दिन चन्द्रमा का प्रकाश लुप्त हो जाता है और अंधकार का साम्राज्य प्रकट होता है। मानव का स्वरुप चन्द्रमा की तरह है जो आत्मसूर्य के प्रकाश से प्रकाशित है। जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश प्राप्त करता है परन्तु चन्द्रमा सूर्य के पूर्ण प्रकाश को व्यक्त नही कर सकता है ठीक इसी प्रकार हमारा स्वरुप आत्मसूर्य के दिव्य प्रकाश से आलोकित है परन्तु स्वरुप के द्वारा आत्मसूर्य के प्रकाश की पूर्ण अभिव्यक्ति तब तक संभव नही है जब तक आत्मस्वरुप का रुपान्तरण सूर्य में न हो जाय। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे समुद्र लहर के रुप में प्रकट हो रहा है परन्तु कोई भी लहर यह नही कह सकती है कि हम समुद्र हैं। लहर समुद्र को पूरी तरह तभी व्यक्त कर सकती है जब लहर, लहर न रहकर समुद्र बन जाय। शास्त्रों में इसी सत्य को शशिमण्डल, चन्द्ररुप, चन्द्रबदन के रुप में वर्णित किया गया है।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने अमावस्या को स्पष्ट करते हुए कहा कि अमावस्या का अभिप्राय अंधकार से है। मृत्यु की अनुभूति सबसे बड़ा अंधकार है। मनुष्य जब यह विस्मृत कर जाता है कि उसका स्वरुप आत्मसूर्य से प्रकाशित है, उस समय उसे मृत्यु रुपी गहन अंधकार का अनुभव होता है जिसके परिणामस्वरुप वह भय, चिन्ता, अज्ञान, काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदत, अहंकार, राग-द्वेष आदि से ग्रसित होता है। आज अधिकांश मनुष्य मृत्यु के गहन अंधकार में जी रहे हैं और इस भ्रम से ग्रसित हैं कि मृत्यु सत्य है। मृत्यु अंतिम सत्य है, इस भ्रम के कारण अनेक प्रकार के गलत सिद्धान्त प्रचलित हैं- मनुष्य जब तक के लिए आया है उसे कोई मार नही सकता है और उसको जब जाना होगा कोई रोक नही सकता है। वास्तव में आना और जाना किसी भाग्य अथवा पूर्व मान्यता पर आधारित नही है। सम्पूर्ण घटनाएँ मनुष्य की स्वयं की विचारशक्ति, इच्छाशक्ति तथा साधना के अधीन है।

क्रियायोग की साधना के द्वारा साधक अमावस्या से पूर्णिमा की तरफ यात्रा करता है। पूर्णिमा में सूर्य का प्रकाश पूर्ण प्रकाशित होता है। पूर्णिमा साधक की साधना की पूर्णता को व्यक्त करता है जिसमें स्थित होने पर मृत्यु रुपी स्वप्न अदृश्य हो जाता है और अमरता का प्रकाश सर्वत्र फैल जाता है। ऐसी अवस्था में साधक अपनी अमरता का दर्शन करने के साथ ही साथ ब्रह्माण्ड की प्रत्येक रचनाओं के अमर व शाश्वत् स्वरुप का साक्षात्कार कर लेता है। अमरता की परमअनुभूति में लीन होने पर साधक गहन मौन में स्थित होता है। ऐसी अवस्था में वह समत्व में स्थापित होता है तथा इन्द्रियातीत अवस्था की प्राप्ति कर लेता है। मौन का अभिप्राय साधक की उस उच्चावस्था से भी है जहाँ उसे दूसरों तक अपने विचार संप्रेषित करने के लिए वाणी की आवश्यकता नही पड़ती है। वह बिना वाणी के बोलता है, बिना आँखों के देखता है, बिना पैरों के चलता है। शास्त्रों में इसी अवस्था को वर्णित करते हुए कहा गया है- बिन कर कर्म करै बिधि नाना।

स्वामी जी ने सभी का आवाहन किया कि आइए। क्रियायोग का अभ्यास करके मृत्यु के स्वप्न से ऊपर उङ्गकर अमरता का दर्शन करें। अमरता की अनुभूति में आप अलौकिक सुख, अनन्त शांति व शाश्वत् आनन्द (परमानन्द- BLISS) की प्राप्ति करेंगे। इन्द्रियों का कोई भी सुख अमरता की अनुभूति में प्राप्त अलौकिक सुख की तुलना में अंश मात्र भी नही है।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैन्ड, साउथ अफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा ॲग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता